पाठ 14

मत ठहरो तुमको चलना ही चलना है

आइए सीखें - ■ जीवन में अनुशासन और गतिशीलता का महत्व। ■दृढ़-निश्चय की क्षमता। ■ 'मत' का प्रयोग, विलोम शब्द, तुकान्त शब्दों की समझ।

मत ठहरो, तुमको चलना ही चलना है,
चलने के प्रण से, तुम्हें नहीं टलना है।

केवल गति ही जीवन, विश्रान्ति पतन है,
तुम ठहरे, तो समझो ठहरा जीवन है।

जब चलने का व्रत लिया, ठहरना कैसा?
अपने हित सुख की खोज बड़ी छलना है।

मत ठहरो तुमको चलना ही चलना है।

शिक्षण संकेत - ■शिक्षक कविता का हावभाव सहित वाचन कीजिए। ■कक्षा में व्यक्ति का उद्देश्य बालकों के समक्ष रोचक ढंग से प्रस्तुत कीजिए। ■निरन्तर जीवन को गतिशील बनाने के लिए हमें क्या करना चाहिए, इस पर चर्चा कीजिए।

तुम चलो, जमाना अपने साथ चलाओ,
जो पिछड़ गए हैं, आगे उन्हें बढ़ाओ।
तुमको प्रतीक बनना है, विश्व प्रगति का
तुमको जन-हित के साँचे में ढलना है।

मत ठहरो तुमको चलना ही चलना है।

बाधाएँ, असफलताएँ तो आती हैं,
दृढ़निश्चय लख, वे स्वयं चली जाती हैं।
जितने भी रोड़े मिलें, उन्हें ठुकराओ
पथ के काँटों को पैरों से दलना है।

मत ठहरो तुमको चलना ही चलना है।

जो कुछ करना है, उठो! करो, जुट जाओ,
जीवन का कोई क्षण, मत व्यर्थ गँवाओ।
कर लिया काम, भज लिया राम यह सच है,
अवसर खोकर तो सदा हाथ मलना है।

मत ठहरो तुमको चलना ही चलना है।

श्रीकृष्ण 'सरल'

सरल जी का जन्म 9 जून 1921 ई. में तत्कालीन गुना जिले के अशोक नगर में हुआ था। श्रीकृष्ण सरल एक समर्पित व्यक्तित्व का नाम है। उन्होंने लेखन में कीर्तिमान स्थापित किए हैं। इन्होंने लगभग पैतीस गद्य तथा नौ महाकाव्य तथा चार खंड काव्यों की रचना की है। इनमें प्रमुख हैं शहीद भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद, सुभाषचन्द्र बोस, क्रांति-ज्वाला आदि।

अभ्यास

बोध प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

(क) कवि का ठहरने से क्या तात्पर्य है?

(ख) हमें अपने साथ किन्हें लेकर चलना है?

(ग) जीवन की बाधाओं को कैसे दूर किया जा सकता है?

(घ) कवि के अनुसार मनुष्य को कब पछताना पड़ता है?

(ङ) कवि निरन्तर चलते रहने को महत्व क्यों दे रहा है?

(च) समय व्यर्थ क्यों नहीं गँवाना चाहिए?

2. निम्नांकित पंक्तियों के भाव स्पष्ट कीजिए -

(क) तुमको प्रतीक बनना है, विश्व प्रगति का।
तुमको जनहित के साँचे में ढलना है।

(ख) जितने भी रोड़े मिलें, उन्हें ठुकराओ।
पथ के काँटों को पैरों से दलना है।

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

(क) सुख की खोज बड़ी.....है।

(ख) जनहित के साँचे में.....है।

(ग) काँटों को पैरों से.....है।

(घ) अवसर खोकर हाथ.....है।

(ड.) प्रण से तुम्हें नहीं.....है।

भाषा अध्ययन

1. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखिए। साथ ही कविता में उन पंक्तियों को छाँटकर लिखिए, जिनमें इन मुहावरों का प्रयोग हुआ हैं -

साँचे में ढलना, हाथ मलना, व्रत लेना, जुट जाना, अवसर खोना

2. कविता में पाठ पढ़ते समय तुकान्त शब्द (जैसे - चलना, टलना प्रयुक्त हुए हैं) आनन्द का अनुभव कराते हैं। इनसे कविता में लय भी आ जाती है। आप इस कविता से ऐसे ही तुकान्त शब्द छाँटकर लिखिए।

विलोम शब्द - वे शब्द जो एक दूसरे के विपरीत अर्थ बताते हैं, उन्हें **विलोम शब्द** कहते हैं।

विलोम शब्द कई तरह से प्रयोग में आते हैं। जैसे -

(1) सामान्य रूप से साथ-साथ प्रयुक्त होने वाले विलोम शब्द -
लाभ-हानि, आय-व्यय

(2) उपसर्ग लगाकर बनाए गए विलोम शब्द -
आशा-निराशा, सम-विषम, मंगल-अमंगल

(3) लिंग परिवर्तन वाले विलोम शब्द -
माता-पिता, चाचा-चाची

3. निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित शब्दों के विलोम शब्द उदाहरण अनुसार भरिए।

जैसे- (क) जीवन में उत्थान और पतन आते ही रहते हैं।

(ख) कहीं भी अधिक ठहरना अच्छा नहीं, हमेशा प्रगति के पथ पर.....अच्छा है।

(ग) पशु-पक्षी भी अपना हित.....जानते हैं।

(घ) असफलता के बाद.....का मिलना एक प्रक्रिया है।

(ड.) सुख सभी चाहते हैं.....कोई नहीं।

4. इस पाठ में 'मत' शब्द का प्रयोग विविध रूपों में हुआ है। जैसे -

मत ठहरो,

मत व्यर्थ गँवाओ।

और भी प्रयोग देखिए -

ठहरो मत, आगे बढ़ो।

मत ठहरो, आगे बढ़ो।

ठहरो, आगे मत बढ़ो।

उक्त प्रयोगों की तरह नीचे दिए गए वाक्यों में 'मत' का प्रयोग कीजिए -

(क) रुको मत, आगे बढ़ो।

(ख) पढ़ो मत, बात करो।

(ग) हँसो मत, भोजन करो।

(घ) भागो मत, धीरे चलो।

योग्यता विस्तार

1. विद्यालय में किसी अवसर पर इस कविता का सस्वर वाचन कीजिए।
2. इसी प्रकार के भाव व्यक्त करते हुए चार पंक्ति में एक कविता बनाइए।
3. 'चलना ही चलना है' विषय पर अपने विचार पाँच वाक्यों में लिखिए।

हमारे जीवन का प्रत्येक अगला दिन पिछले दिन से कुछ ऐसे ढंग का हो
जिसमें हमने कुछ सीखा हो।